EDITORIAL BOARD

CHIEF EDITOR
Mr. Chitrasons Gautam
Faculty of Commerce, Banaras Hindu University
Secretary, Gautam Buddha Kalyan Sansthan

EDITORS
Dr. Chunnuprasad
Academic officer, NIOS
Ministry of HRD, Govt. Of India

Mr. Suraj Yengde
Doctoral Candidate
University of Witwatersand, S.A

Ms. Munmi Sen
Assistant Professor
Gauhati University, Assam

EDITORS
Prof. Amita Singh
Professor, CSLG, JNU
Secretary General, NAPSIPAG

Dr. Rajesh Kumar
Associate Professor
Buddha PG College, Kushinagar

Dr. Kesheo Prasad
Assistant Professor
Dept. of Civil, IIT BHU

Dr. Brijesh Ashwal
Assistant Professor
Deptt. of Pharmacology, IMS BHU

Dr. Sandeep Kumar
Assistant Professor
Soman College of Commerce, Jodhpur

Dr. Carina Jofre
National University
Argentina

Mr. Suresh Prasad Ahirwar
Assistant Professor
Govt. College, Seoni M.P.

Mr. Prakash Chandra Dilare
Faculty Member
Deptt. of Sociology, GBU

Dr. Anita Kaul
Post Doctoral Fellow
Banaras Hindu University

Mr. Amol Madame
Research Scholar
CSSS/SSS, JNU

Mr. Govind Kumar
Ph.D. in Management, FMS
Banaras Hindu University

Ms. Garima
Research Scholar, FMS
Banaras Hindu University

ADVISORY BOARD
Prof. Vivek Kumar
School of Social Sciences, JNU

Prof. V. Shunmugasundaram
Faculty of Commerce, BHU

Prof. B.K. Singh
Faculty of Commerce, BHU

Prof. S. P. Srivastava
Faculty of Commerce, BHU

Prof. Ajeya Kumar Gupta
D.D.U. Gorakhpur University

Dr. Alok Kumar Kashyap
MBS College Varanasi

Dr. Anusa Daimon
University of Free State, S.A

Dr. S. Veeramani
Centre for Management Studies, JMI

Mr. Surendra Sharma
Assistant Director, MSME

With the blessings of
Late Smt. Tula Devi and Shri Santra Prasad
CONTENTS

Local Governance in Odisha: With Reference to Marginalised Groups
Susanta Kumar Mallick 1-7

Input Tax Credit under VAT Regime - An appraisal
Dr. Abhishek Ojha 8-11

Impact of Non Performing Assets on Profitability of Private Banks in India
Dr. Sangeeta Kumpawat 12-23

Relevance of Dr. Ambedkar in Present Scenario
Dr. Rajesh Kumar 24-28

Indian Infrastructure Industry and Project Finance: New Debt-based Financing Models
Ruby Singh, Dr. Amit Gautam 29-38

Environmental Accounting and Reporting: An Evaluation of ONGC
Rakesh Kumar Verma 39-46

Online Shopping: A Serious Threat For Traditional Retailers
Amit Kumar Tiwari 47-54

Role of Women Entrepreneurs in the Economic Development of India
Dr. Pradeep Kumar 55-62

E-Tailing – A Study of Factor Affecting 'Consumers Behaviour' Towards Online Shopping Amongst Youth of Jodhpur City
Mahendra Daiya 63-71

Quality of Work Life in PSU(s): an overview of Human Resource Management in SAIL
Reshma Dhingra 72-79

Micro-insurance in India: Development and Planning for more Extension
Ashish Kumar Gupta 80-85
Dalit Movements and Patterns of Dalit Mobilization in Maharashtra
Waghmare B. N.

New women of Taslima Nasrin Novel’s
Sandhya Singh Yadav

पूर्व–मध्यकाल में बौद्ध धर्म: पूर्वी भारत के विशेष संसर्ग
दों अनुराधा सिंह

पं जवाहरलाल नेहरू की विदेश–नीति
राम पाल सिंह

धार्मिक परिप्रेक्ष्य के आलोक में पंचकौशी परिक्रमा एवं समीपवर्ती क्षेत्रों की प्राचीन एवं
अद्वितीय मूर्ति निर्माण तकनीक : एक सर्वेक्षण
गोपाल जी

मुख्यकृतियों में वर्णित सामाजिक कुरानियां
डॉ कलावती

Harish Chandra, International Human Rights Regime and India, Abhijeet
Publication, New Delhi, 2014
Chunnu Prasad
पं जवाहरलाल नेहru की विदेश–नीति

स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर 1964 ई. में अपनी मृत्यु के समय तक प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहru ने भारत की विदेश नीति का संचालन किया और उसे निर्मित आधार प्रदान किया।

नेहru की विदेश नीति विश्व–शासन और सभी राज्यों के साथ मिजता करने की थी। संसार के सभी राज्य समान हैं, सभी राज्य स्वतंत्र हों और सभी राज्यों में पारस्परिक सहयोग और मिजता हों – यही भारत की विदेश नीति का मुख्य आधार बना। नेहru की यह नीति भारत की भौगोलिक परिस्थितियों, आर्थिक आवश्यकताओं तथा प्राचीन परम्पराओं के अनुकूल है।

स्वतंत्र भारत की मुख्य आवश्यकता उसका आर्थिक विकास था। इसी कारण सभी राज्यों से मित्रता करना और विश्व शासन भारत के लिए आवश्यक थी। पं. नेहru ने विदेश–नीति के समर्थ में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा – “अर्थशास्त्रीय समझों में हम किसी अन्य राज्य की कठिनाई बन कर नहीं बनकर अपनी स्वच्छ की नीति को लेकर एक स्वतंत्र राष्ट्र की तरह पूरा–पूरा मान लेंगे। हम अपने राष्ट्रों के साथ घनिष्ठ और प्रकृत सम्बन्ध स्थापित करने और विश्व शासन और स्वतंत्रता को आगे बढ़ाने के लिए उनके साथ सहयोग करने की आशा करते हैं।” पं. नेहru की विदेश नीति अपने आप में स्वतंत्र नीति थी। हिन्दी गलपुंज के परमाणु विविध जो राष्ट्रवादियों गुटों में लट गया। 19 तारह अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और जापान स्वजन थे तथा दूसरी तफ स्व और अन्य साम्यवादी राज्य थे। भारत ने इन दोनों गुटों में से किसी एक के साथ मिलने से इंकार कर दिया। इस नीति को तदस्थता की नीति कहा गया। पं. नेहru ने इसे सरकार तदस्थता के नाम से पुकारा। उनका कहना था – “भारत विदेशी मामलों में उदासीन नहीं है, बल्कि उसने दो गुटों में तदस्थ रहकर स्वतंत्र रीति से विश्व शासन के लिए सरकार प्रयत्न किये है। जो निस्तारन, अधिक उपयोगी है, परस्पर अधिक गम्भीर और खतरनाक भी।

ऐसी स्थिति में भारत की तदस्थता की नीति निकटता की कमी नहीं मानी जा सकती बल्कि सरकार तदस्थता की है। भारत ने इतने समय और लोकप्रिय की स्वतंत्रता के लिए सरकार प्रयत्न किये, दैनिक आमिरा की सरकार की रंग–नेदर नीति स्वतन्त्र विश्व किया, ब्रिटेन के स्वातंत्र्य में खर्च नहर पर किये गये आक्रमण का विरोध किया और प्रमुख अवस्था पर संयुक्त राष्ट्र (U.N.O.) सरकार तदस्थता करने की। ब्रिटेन के स्वातंत्र्य नहर पर किये गये आक्रमण का विरोध करने के कारण भारत में ब्रिटेन और भारत के सम्बन्ध बढ़ते रहे और ब्रिटेन ने 1962 ई. में चीन–भारत युद्ध के समय सैन्य सहयोग भी किया।

बड़े देशों में भारत के अमेरिका से सम्बन्ध अच्छे नहीं थे, क्योंकि भारत हिन्दी विश्व गुट के दोनों अमेरिकी गुट में शामिल होने से इंकार कर दिया था तथा भारत ने चीन जनवादी गणराज्य को नक्सली
यह सिद्धांत स्थापित है—
1— एक दुसरे की दीवार और समय का समान
2— असंभव
3— एक दुसरे के मन्त्रों में हस्तक्षेप न करना।
4— समाजता और प्राथमिक नीति।
5— शांति-विश्वास और अनशुरूपी नीति का हिस्सा बना दिया। एक स्थान पर प. नेहरू ने अपनी विदेश नीति के रूप में प्रकट कर दिए हैं कि—“हम भुक्तः, उपनिवेशों और दूसरे पर निर्भर रहने वाले देशों एवं उनके नागरिकों की रक्षा का समान और व्यवहारिक दोनों दृष्टियों से प्रतीत संबंध ज्ञात करने के लिए समस्त सुविधाओं की स्वीकृति को ध्यान में रखते हैं।” ज्ञात की विदेशों के बारे पर प. नेहरू ने, भारत की विदेश-नीति का व्यवहारिक प्रयोग किया। भारत ने सभी देशों की जातीय स्वतन्त्रता का समर्थन करने का सम्मान किया, भारत ने यथार्थक साहसिक और कार्यवाहक कार्यक्रम का उत्साह दिया और भारत ने प्रत्येक वर्ष ही होने के कारणों को रूपांतरक मांग के लिए उठाया। इसके बाद भारत के वर्ष 1951 में चीन की जनमुक्ति रोशन तिवारी में प्रवेश कर गया था। जो भारत और राष्ट्रवादी नीति के बीच 1954 में इस समाधी के अवसर पर प्रस्तावित हुआ था।
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- (1.2)-शामी, एल्टॉ गी - आधुनिक भारत
2- बेद, बान, सुधीर - भारत की विदेश नीति : बदलते समय - नेशनल प्रकाशिंग हाउस, नई दिल्ली
3- बीशी लायल - भारतीय शासन एवं राजनीति - नेशनल प्रकाशिंग हाउस, नई दिल्ली
4- बीएल एलडॉ गोवर - आधुनिक भारत का इतिहास - एसएल चन्द्र एण्ड कम्युनीलिमिटेड रामनगर नई दिल्ली - 1100055
5- चन्द्रु, विपिन - आधुनिक भारत - हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय नई दिल्ली 10- कलेक्ट्री लाइन दिल्ली (1971)
6- दलित, राजनीपाम - आज का भारत - दिल्ली 1977